

सुख आना चाहता है, उसे आने का अवसर दें - ब्रह्माकुमारी उषा



शीतलता में आ जायेगा। हमारा गुण धर्म है शान्ति, सुख, प्रेम, आनंद जिससे हमें सच्चा आराम मिलता है। गुस्सा करने के बाद, निगेटिव सोचने के बाद हमे परेशानी का अनुभव होता है। जीवन में अगर दुःख प्राप्त हो रहा है तो उसका कारण हम पर-धर्म में स्थित हैं। उसमें अपने आपको स्थित न करो। जितना जल्दी वापस हम अपने स्वधर्म में स्थित हो जाते हैं उतना जीवन में सुख को आने का अवसर देते हैं।

साधन बहुत अच्छी चीज़ है लेकिन साधनों की गुलामी को स्वीकार न करें। मोबाइल बहुत अच्छा साधन है, कई काम कर देता है। लेकिन आज मनुष्य ने उसकी गुलामी को स्वीकार कर लिया है। खाना खाने बैठा है तो भी हाथ में मोबाइल है। तीन जगह ऐसी है जहां मोबाइल का मुंह बंद रखना चाहिए। एक खाना खाते समय, दूसरा बाथरूम में और तीसरा सतसंग में। इन साधनों में हम इतना व्यस्त हैं कि सच्चे सुख को अनुभव करने के लिए, बांटने के लिए हमारे पास समय ही नहीं है।

शांतिसरोवर के ऑडिटोरियम में 'सुख को एक अवसर दो' विषय पर बोलते हुए ब्र.कु. उषा।
हैदराबाद-शांतिसरोवर। सुख हमारे जीवन में आना चाहता है परंतु हम उसको अवसर ही नहीं देते, जीवन यात्रा में हैपिनेस कोई डेस्टिनेशन नहीं है, एक जर्नी है, एक यात्रा है। कई बार हम इसे डेस्टिनेशन समझ लेते हैं कि ये चीज़ प्राप्त हो जाये तो मैं सदा सुखी हो जाऊंगा। मनुष्य ने धीरे-धीरे जीवन में बहुत सारी भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त किया, फिर भी सुख जीवन से कोसों दूर ही रहा। सुख चाहता है कि मेरा मालिक मुझे प्रयोग करे, मेरा अनुभव करे, लेकिन मालिक शायद अपने में ही इतना व्यस्त है कि सुख का अनुभव करने का उसको ख्याल भी नहीं आता। वो कई उलझनों में व्यस्त रहता है।

हे अर्जुन स्वधर्म सुख देता है और परधर्म दुःख

उन्होंने गीता के दूसरे अध्याय का उदाहरण देते हुए कहा कि बहुत सुंदर बात कही गई है, हे अर्जुन स्वधर्म सुख देता है और परधर्म दुःख का कारण है। स्वधर्म का मतलब है कि हर चीज़ का अपना एक गुण धर्म होता है। पानी का गुण धर्म है शीतलता, अग्नि का गुण धर्म गर्मी है। पानी को कितना भी उबालो फिर भी वह अपने मूल गुण धर्म

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वप्न - मैं एकव्रता हूँ।

मेरे सारे सम्बंध एक बाबा से हैं...बाबा ही मेरे संसार हैं...वही मेरे सर्वस्व हैं...मैंने दिल से उन्हें अपना सब कुछ मान लिया है...ये जान लिया है कि वही सच्चे साथी और सहारे हैं...वही सच्चे शुभचिंतक और मार्गदर्शक हैं...उनके सिवाए और कोई भी इस विषय सागर से मुझे पार नहीं ले जा सकता...संसार के सभी व्यक्ति और वस्तु मेरा साथ छोड़ देंगे, लेकिन बाबा सदा मेरे साथ रहेंगे और अपने साथ ही ले जायेंगे...तो ऐसे परमप्रियम के प्रति क्यों ना मैं सम्पूर्ण समर्पित-सम्पूर्ण एकव्रता होकर रहूँ...!!

योगाभ्यास - प्यारे बापदादा हमें बार-बार मन-बुद्धि को एकाग्र करने की प्रेरणा दे रहे हैं। आने वाले समय में इस अभ्यास की बहुत-बहुत आवश्यकता होगी। इसलिए इस सप्ताह हम अपने विभिन्न स्वरूपों पर स्वयं को एकाग्र करते हुए अपनी एकाग्रता की अवधि को बढ़ाते चलें- अ. परमधाम में

सर्वशक्तिवान शिव बाबा पर एकाग्रता - बाबा से सर्व शक्तियों की किरणें स्वयं में भरें और पूर्णरूपेण महाज्योति पर स्वयं को एकाग्र कर दें...।

ब. अपने सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप पर एकाग्रता - अपने सामने अपने सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप को देखें...धीरे-धीरे आपका सम्पूर्ण स्वरूप आपके समीप आता है और आपमें ही समा जाता है...।

स. अपने अनादि आत्मिक स्वरूप पर एकाग्रता - भृकुटि तख्त पर मैं महातेजोमय आत्मा विराजमान हूँ...मुझसे चारों ओर दिव्य प्रकाश फैल रहा है...मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ...।

द. विभिन्न स्वप्नों पर एकाग्रता - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... विजयी रत्न हूँ... इष्ट देव हूँ... इन स्वप्नों पर स्वयं को एकाग्र करें और स्वरूप बनते जायें।

चिंतन - एकव्रता और एकाग्रता - वर्तमान

समय एकाग्रता की आवश्यकता एवं महत्ता। एकव्रता और एकाग्रता का आपस में क्या संबंध है? एकव्रता के साथ-साथ और कौन-कौन सी बातें हमारी एकाग्रता को बढ़ाने में मददगार हैं? कौन-कौन सी बातें हमारी एकाग्रता को भंग करती हैं?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! यदि गहराई से विचार करें तो हम पायेंगे कि इस संसार में 'मेरा' कोई भी नहीं है, कुछ भी मेरा नहीं है। यदि मैं किसी को 'मेरा' कह सकता हूँ तो वो केवल बाबा ही है। यदि बाबा के सिवाए किसी और को 'मेरा' मानता हूँ तो यह मेरी अज्ञानता है। तो ज्ञान का तीसरा नेत्र खोलें और एकव्रता हो जायें। अपने मन-बुद्धि को असार संसार में न भटकायें। अब तो वापस घर जाना है, यदि अब भी बुद्धि भटकती रही तो आखिर हम कब एकाग्र हो पायेंगे? इसलिए हे योगियों, अब एकव्रता बनकर एकाग्र हो जाओ।

स्वप्न - मैं बेफिकर बादशाह हूँ।

बेफिकर बादशाह अर्थात् - सदा निश्चयबुद्धि, निश्चित और डबल लाइट जीवन वाले...सारे बोझ बाप को देकर स्वयं को निमित्त समझने वाले... करन करावनहार बाबा करा रहे हैं और मैं निमित्त बन कर रहा हूँ... इस स्मृति में रहने से बेफिकर बादशाह बन जायेंगे।

योगाभ्यास - स्वयं भगवान मेरा... उसने मेरे सारे बोझ ले लिये... उसने मुझे सर्व फिकरों से मुक्त कर दिया... सारी चिंताएं हर ली... अब मैं पूरी तरह से निश्चित और निर्भय हूँ... क्योंकि हर पल अब मैं उसकी छत्रछाया के नीचे हूँ...।

बाबा के महावाक्य हैं - यदि तुम मेरी याद में

मगन रहो तो तुम्हारे लिए सोचने का काम भी मैं करूंगा..., तो स्वयं से बात करें कि जिसके लिए सोचने का काम भी भगवान कर रहा हो... फिर उन्हें फिकर करने की क्या ज़रूरत?

धारणा - फिकर को बेफिकर स्थिति में परिवर्तन करना। बेफिकर स्थिति बनाने के लिए सारे बोझ बाप को देकर हल्के रहें...।
मैं और मेरा ये दो शब्द ही बोझ बनकर हमारे स्थिति को नीचे ले आते हैं इसलिए जब भी मैं शब्द बोलो... तो पहले आत्मा याद आये... और जब मेरा शब्द बोलो तो पहले बाबा याद आये।

चिंतन - स्वयं से पूछें - क्या मैं बेफिकर बादशाह स्थिति का अनुभव करता हूँ? और यदि नहीं तो क्यों? किन-किन बातों की मुझे फिकर है? और यदि मुझे बेफिकर बादशाह बनना है तो मुझे क्या-क्या करना होगा?

साधकों के प्रति - जब हज़ार भुजाओं वाला बाप तुम्हें सहयोग देने के लिए तैयार है फिर तुम दो भुजाओं वाले मनुष्यों की तरफ क्यों देखते हो? कौन ज़्यादा सहयोग देगा, हज़ार भुजाओं वाला भगवान या दो भुजा वाला मनुष्य? तो सदा हज़ारों भुजाओं वाले बाप को साथ रख बेफिकर स्थिति का अनुभव करते चलो।



अस्का-ओडिशा। श्री श्री जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवाती।



राँची। शिवरात्रि कार्यक्रम 'मंगल मिलन' में दीप प्रज्वलित करते हुए समाजसेवी परमानन्द जी, ब्र.कु. निर्मला, सी.ए. संघ अध्यक्ष उदय जायसवाल तथा डॉ. बी.के. गुप्ता।



फतेहपुर-बाराबंकी। महाशिवरात्रि पर आयोजित झाँकी का अवलोकन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में सांसद प्रियंका रावत, ब्र.कु. शीला तथा अन्य।



जयपुर-भवानी नगर। नौ देवियों की चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में राज्यसभा सांसद अशक अलि टॉन्क, जयपुर कांग्रेस अध्यक्ष गिरिराज गर्ग, ब्र.कु. हेमा, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।



हरदोई-उ.प्र.। हरदोई महोत्सव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् सेवाकेन्द्र में आने पर कानपुर विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर डॉ. वी. वैशमपापन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रोशनी। साथ हैं ब्र.कु. शान्ति व ब्र.कु. कोमल।



औरैया-गेल गांव। महाशिवरात्रि कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए गेल के जी.एम. एच.आर. ए.सी. पाण्डेय, एच.आर. दास, ब्र.कु. हर्षा, ब्र.कु. कृष्णा तथा अन्य।